विशारद द्वितीय वर्ष

गायन - वादन (स्वर वाद्य)

पूर्णांक : 400, न्यूनतम : 180

क्रियात्मक : 250 (क्रिया : 200 + मंच प्रदर्शन : 50) न्यूनतम : 128

शास्त्र : 150 न्यूनतम : 52

प्रथम प्रश्न पत्र

पूर्णांक : 75, न्यूनतम : 26

शास्त्र :-

१) पाठ्यक्रम के सभी रागों का विस्तृत विवेचन तथा सोदाहरण समानता - विभिन्नता का अध्ययन। स्वर समुदाय से राग को पहचानना तथा राग का विस्तार लिखना।

२) पाठ्यक्रम के सभी तालों का विस्तृत अध्ययन एवम् उन्हें विष्णु दिगंबर और भातखंडे पद्धति में लिखने की क्षमता। पाठ्यक्रम के तालों की दुगुन, तिगुन, चौगुन लयकारी लिखने की क्षमता।

३) निम्नलिखित विषयों का विस्तृत अध्ययन :
मार्गीसंगीत, देशीसंगीत, स्वस्थान नियम, गंधर्वगान, कुतप वृंदगान।

४) शुद्ध, छायालग, संकीर्ण (रागवर्गीकरण) पद्धति।
परमेल प्रवेशक राग, दशविध राग वर्गीकरण पद्धति। (संगीत रत्नाकर के अनुसार)

५) वर्तमान काल के दो प्रसिद्ध गायकों की / वादकों की गायन, वादन शैलियों का परिचय।

६) मध्यकालीन एवम् आधुनिक स्वर स्थापना। वीणा के तार पर मध्यकालीन एवम् आधुनिक संगीतज्ञों के स्वर स्थानों की तुलना। तार की लंबाई की सहायता से आन्दोलन संख्या के आधार पर तार की लंबाई निकालना।

७) स्वरसप्तक का विकास (प्राचीन से आधुनिक काल तक)।

८) पाश्चात्य संगीत के निम्नांकित सिद्धांतों का सामान्य अध्ययन Vibration, Frequency, Duration, Interval, Scale, Natural, Tempered Octave, Major tone, Minor tone, Semi Tone.

९) संगीत के घरानों का संक्षिप्त इतिहास।

१०) सारणा चतुष्टी के भरत एवम् शार्ङ्गदेव द्वारा किये प्रयोगों का विवेचन।

११) कर्नाटक संगीत के स्वर, ताल, राग का सामान्यज्ञान तथा उ. भारतीय संगीत से तुलनात्मक अध्ययन।

द्वितीय प्रश्न पत्र

पूर्णांक : 75, न्यूनतम : 26

१) तानपूरे से निर्माण होनेवाले सहायक (सांध्वनिक) नादों का विश्लेषणात्मक विस्तृत अध्ययन।

२) कलावंत, पंडित, वाग्गेयकार, गीति, धृपद की बानियाँ एवम् गमक के प्रकार। (टिप्पणी लिखिए)।

३) संगीत विषयों पर निबंध :-

१) संगीत की वर्तमान समस्याएँ

२) रस और लय संबंध

३) महफिल का आयोजन

४) गुरुशिष्य परम्परा एवम् आधुनिक शिक्षा पद्धति ।

४) संगीत के निम्नलिखित ग्रंथकारों का योगदान :-

(१) भरतमुनि (२) शार्ङ्गदेव (३) मतंग

(४) रामामात्य (५) अहोबल (६) आचार्य बृहस्पति

(७) ठाकुर जयदेव सिंग

निम्नलिखित विषयों का अध्ययन :-

१) रवींद्र संगीत का विस्तृत अध्ययन।

२) हवेली संगीत की परंपरा।

३) स्वरलिपि पद्धति का क्रमिक विकास और गुणदोष ।

४) फिल्मी संगीत और संगीतकार, पार्श्वगायन, ध्वनिमुद्रण, काव्य और संगीत ।

५) वृंदवादन रचना के नियम।

६) प्राचीन प्रबंध गायन के नियम और प्रबंधों के प्रकार।

७) पाश्चात्य नोटेशन पद्धति का साधारण ज्ञान।

क्रियात्मक :

- सभा में गाने/बजाने का अभ्यास तथा उसमें निपुणता प्राप्त करना इस वर्ष अपेक्षित है। रागों का सूक्ष्म परिचय, संगीत के विभिन्न विषयोंपर (क्रिया और शास्त्र) मौलिक विचार तथा उनको समझने और समझाने की योग्यता विद्यार्थी में होनी चाहिये। अपना वाद्य मिलाने की क्षमता अपेक्षित है। विद्यार्थी को संगीत सभा आयोजन तथा संचालन का भी प्रत्यक्ष अनुभव होना चाहिये।

स्वरज्ञान :-

- गाई/बजाई हुई अथवा स्वरलिपिबद्ध किसी भी स्वररचना को आत्मसात् करने की योग्यता। सुनी हुई अथवा सीखी हुई रचना की स्वरलिपि मूल रूप में तथा गायकी अंग मे परिवर्तित करने की क्षमता।

रागज्ञान :-

- रागों की प्रकृति का सूक्ष्म अध्ययन, उनमें स्वतंत्रता से विचरण, नई स्वररचनाएँ बनाना, (सरगम, गत/गीत, तथा वृंदवादन) आविर्भाव, तिरोभाव, गमक, मींड, आंदोलन आदि का

विस्तार से रसानुकूल समुचित प्रयोग करने का अभ्यास।

- निम्नलिखित सभी रागों में एक - एक विलंबित ख्याल तथा एक-एक द्रुत ख्याल / एक-एक मसीदखानी गत तथा एक-एक रजाखानी गत तैयार करनी है। विलंबित ख्याल विविध तालों में तैयार करना अनिवार्य है। हर एक राग २० से ३० मिनिट तक गाने - बजाने की क्षमता अपेक्षित है। वादन के लिए, विलंबित गत संपूर्ण विस्तार के साथ। मींड, घसीट, जमजमा, कृंतन व सूत इत्यादि (वाद्य विशेष के अनुसार), झाले के विभिन्न प्रकार एवं तैयारी।
- राग :- विस्तृत अध्ययन के लिए :-

  १) मियाँ मल्हार, २) मुलतानी, ३) मारूबिहाग,
  ४) पूरिया, ५) शुद्धकल्याण, ६) दरबारी कानड़ा

  साधारण ज्ञान के लिए :-

  १) बिभास, २) ललित, ३) तोड़ी,
  ४) बसंत, ५) सोहनी, ६) हिंडोल,
  ७) मारवा

- साधारण ज्ञान के रागों में मध्यलय की बंदिशें/गतें १५ मिनिट तक आलाप तानों सहित/तोड़ों सहित गाने बजाने की क्षमता।
- इस वर्ष के किसी राग में एक ध्रुपद, एक धमार दुगुन, तिगुन, चौगुन के साथ, दो तराने, एक त्रिवट इस प्रकार ५ अन्य बंदिशें अलग अलग रागों में तैयार करनी है। वादन के लिए अपने वाद्य पर दुगुन, तिगुन तथा चौगुन लय बजाने का अभ्यास, वादन के विद्यार्थी इतनी ही रचनाएँ विभिन्न तालों में तैयार करें।
- उपशास्त्रीय संगीत में ठुमरी,दादरा या तत्सम अन्य कोई प्रकार(किसी प्रादेशिक भाषा में) तैयार करना है।

तालज्ञान :-

- अभी तक सीखे हुए सब तालों का संपूर्ण परिचय तथा उनको हाथ से ताली देकर बोलना तथा विभिन्न लयकारियों में बोलना। हाथ से ताली देकर बंदिश गाने की क्षमता।

अंकपत्रिका :-

सूचना : इस परीक्षा के लिये एक घंटे का समय निर्धारित किया गया है। इसके अतिरिक्त 25 मिनट का मंच प्रदर्शन अलग से श्रोताओं के सामने (संगीत सभा की तरह) होगा। मंच प्रदर्शन में विशारद द्वितीय वर्ष के पाठ्यक्रम के रागों में से किसी एक राग में विलंबित तथा मध्यलय की बंदिश संपूर्ण विस्तार के साथ प्रस्तुत करनी होगी। परीक्षार्थी चाहे तो इसके बाद (समय रहा तो) उपशास्त्रीय संगीत की रचना भी प्रस्तुत कर सकता है। गायन के परीक्षार्थी चाहे तो ताल वाद्य के साथ-साथ स्वर वाद्य की संगत भी (केवल मंच प्रदर्शन में) ले सकते हैं।

संपूर्ण विस्तार के साथ पूछी गई बंदिशों के लिए 7-7 मिनट तथा मध्यलय की बंदिशों के लिए 5-5 मिनट समय दे कर शेष समय में सभी कॉलम के प्रश्न पूछना है।

वाद्य मिलाना : तानपुरा तथा अपना वाद्य स्वर में मिलाने की क्षमता : 15 अंक।

विलंबित बंदिश : इस वर्ष के एक राग में संपूर्ण विस्तार के साथ बंदिश 16 अंक। तथा अन्य दो रागों में अलग अलग तालों में ३-३ आलापों के साथ बंदिश : 10 + 10 अंक। इस वर्ष के अन्य एक राग में तथा पिछले एक राग में राग वाचक आलाप के साथ केवल बंदिश : 7 + 7 अंक।

कुल 50 अंक।

मध्यलय की बंदिशें : इस वर्ष के एक राग में संपूर्ण विस्तार के साथ बंदिश 10 अंक। तथा अन्य दो रागों में ३ आलाप तथा ५ तानों के साथ

बंदिशें ६ + ६, इस वर्ष के अन्य एक राग में तथा पिछले एक राग में राग वाचक आलाप के साथ केवल बंदिश : 4 + 4 अंक ।

कुल 30 अंक।

धृपद धमार : धृपद धमार या तत्सम गत की बंदिश : 4 अंक । उस के स्थाई अंतरे की चौगुन : 5 अंक । तथा डेढगुन : 6 अंक । नोम तोम के आलाप जोड, 5 अंक ।

कुल 20 अंक।

अन्य गीत प्रकार : इस वर्ष के रागों मे तराना, त्रिवट, तथा झाला (इन में से कोई एक प्रकार) : 7 अंक ।

अलग अलग तालों में बंदिशें : तीन ताल को छोड कर अन्य ताल में एक बंदिश ३ आलाप तथा 5 तानों / तोडों के साथ : कुल 10 अंक।

राग स्वरूप : पूरिया–मारवा, बसंत–पूरिया धनाश्री, केदार–कामोद, मियामल्हार–बहार, इन में से दो समूहों के राग स्वरूप को आलाप तथा तान अंगों के साथ स्पष्ट करना : 18 अंक।

उपशास्त्रीय : इस वर्ष निर्धारित किये गये रागों में उपशास्त्रीय संगीत का कोई एक गीत प्रकार : 10 अंक।

ताल ज्ञान : तबले पर बजते हुए एक विलंबित तथा एक मध्य लय का ठेका पहचानना, 5 अंक । सभी गीत प्रकारों की बंदिशें ठेका समझकर शुरू करने की क्षमता : 8 अंक । किसी ताल का ठेका हाथ से ताली खाली दे कर तिगुन तथा डेढगुन में बोलना : 3 + 4 अंक ।

कुल 20 अंक।

नोटेशन : बंदिश की पंक्ति को सुनकर उस की स्वरलिपि लिखना तथा वह गा कर बताना और देशभक्तिपर गीत हार्मोनियमपर बजाना तथा गाना : 20 अंक।

इस वर्ष के रागों में से एक राग और उपशास्त्रीय अथवा सुगम संगीत 20 से 30 मिनिट तक प्रस्तुति–मंच प्रदर्शन : 50 अंक।

कुल क्रियात्मक : 250 अंक ।

लिखित : 150 अंक ।

सर्वयोग : 400 अंक।